(कहानी–संग्रह)

मोहन फार्म

डॉ. तेजपाल सिंह

कहानी

मोहन – फार्म

डॉ. तेजपाल सिंह

लोहे का दरवाजा

लोहे का दरवाजा जिसके नीचे की जाली टूटी हुई थी। दरवाजे के बाहर एक छोटा सा मैदान था। मैदान में हरी-हरी घास थी। मैदान के एक कोने में नीम का पेड़ था। नीम के पेड़ की शाखाओं पर कौवे एवं अन्य पक्षी बैठे हुए थे। पेड़ की कुछ दूरी पर पानी का एक नल था, जिसमें पाइप लगाकर मैदान की घास की सिंचाई की जाती थी। पेड़ के नीचे आवारा कुत्तों का अड्डा था। यह मैदान इनके जीवन यापन के लिए सबसे उपयुक्त था। गर्मी से बचने के लिए कुत्ते पंजों से मिट्टी खोद देते और उस पर आराम किया करते थे। खाने के लिए भी उन्हें कहीं भटकना नहीं पड़ता था, क्योंकि इस मैदान के सामने लोहे के दरवाजे के पीछे मैस चलता था। जो भोजन बच जाता वो उन्हें मिल जाता था। मैदानों में रहने वाले कुत्ते मोटे-ताजे थे और आलसी भी। गली-मुहल्लों के आवारा मरियल कुत्तों की तुलना में इनकी अपनी अलग पहचान थी। एक नज़र से देखने पर लगता कि ये पालतु कुत्ते होंगे । बचे हुए भोजन को खाते समय कौवे भी आ जाते थे, ये कुत्ते अन्य कुत्तों की तरह कौवों को नहीं भगाते थे। यहाँ कुत्ता-कौआ समन्वय जीवन के दर्शन होते थे।

लोहे के दरवाजे के नीचे वाले हिस्से से जहाँ से जाली टूटी हुई थी। उसमें से मक्खी और मच्छर बेरोक-टोक आया जाया करते थे। भारतीय प्रशासनिक सेवा की तैयारी कर रहे उन छात्र-छात्राओं का मच्छर खून चूसते और छात्र-छात्राओं के पास काटे हुए स्थान को खुजलाने के सिवाय कोई हल नहीं था। जब इन छात्रों में से जिनका चयन भारतीय प्रशासनिक सेवाओं के लिए हो जाएगा तब ये मच्छरों की औलादों को मरवाने के लिए योजना बनाएँगें।

जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली, भारतीय प्रशासनिक सेवा के लिए प्रवेश परीक्षा आयोजित करवाती है। चयनित अभ्यर्थियों के लिए हॉस्टल एवं मैस की सुविधा भी मिलती है। लोहे के दरवाजे के पीछे इसी विश्वविद्यालय द्वारा संचालित मैस है। दरवाजा खुलते ही दो कतारों में मेज लगे हुए थे। मेजों के दोनों तरफ कुर्सियाँ लगी हुई थी। कुछ कुर्सियों के हत्थे टूटे हुए थे तो कुछ के मात्र तख्ते लगे हुए थे यदि बैठते समय सावधानी न बरती जाए जो गिरने का खतरा बना रहता था। छात्र ऐसी-ऐसी व्यवस्थाओं की तरफ कोई ध्यान नहीं देते थे, क्योंकि वे सोचते होंगे आई.ए.एस. की कुर्सी तक का रास्ता इन्हीं कुर्सियों से गुजरता होगा और यह यथार्थ भी था।